Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

B.A Part – II (Hons)
Paper – III
नीतिशास्त्र (Ethics)

GRB BOOKS

Notes

1 "गीता का नैतिक दर्शन"

(1) गीता वेदव्यासरचित महाभारत का एक अंग है।

(2) गीता के कुल 18 अध्याय हैं और इसके कुल श्लोकों की संख्या 704 है।

(3) गीता एक संवाद है जो गुरुरूप से कृष्ण तथा अर्जुन के बीच सम्पन्न हुआ था जब अर्जुन युद्ध के मैदान में अपने सगे सम्बन्धियों को देखकर किंकर्तव्यविमूढ़ होकर अपने रथ पर बैठ गये। तब कृष्ण ने अर्जुन को आचार नीति के अनेक उपदेश देते हुए उन्हें स्वधर्म का पालन करते हुए युद्ध करने को कहा था। इन उपदेशों का संकलन ही गीता में हुआ है।

(4) गीता में स्वधर्म एवं लोकसंग्रह की बात कही गयी है।

(5) गीता में स्थितप्रज्ञ एक समदर्शी होकर निष्काम कर्म करने की बात कही गयी है। गीता भारतीय दर्शन में विशेषकर वेदों एवं दार्शनिक सिद्धान्तों का समन्वय करके उसका सारतत्व प्रस्तुत करती है।

भारतीय तथा विदेशी अनेक महान् विचारकों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से गीता की व्याख्या की है। आचार्य शंकर, रामानुज, निम्बार्क, अरविन्द, महात्मा गाँधी, तिलक आदि विचारकों ने गीता के नैतिक सिद्धान्तों को स्पष्ट किया है।

शंकर के अनुसार मोक्ष के लिए गीता में ज्ञान-मार्ग पर विशेष

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

बल दिया गया है। रामानुज तथा निम्बार्क का मत है कि गीता भक्ति को ही सर्वोच्च स्थान देती है। अरविन्द तिलक तथा गांधीजी के अनुसार गीता में निष्काम कर्म को ही सर्वाधिक महत्व दिया गया है तथा इसे ज्ञान एवं भक्ति की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ माना गया है।

'गीता' का प्रमुख उपदेश निष्काम कर्मयोग है। निष्काम कर्मयोग प्रवृत्ति और निवृत्ति के बीच, कर्मवाद तथा सन्यास के बीच अथवा भोगवाद और वैराग्यवाद के बीच समीचीन सामंजस्य स्थापित करता है। कर्म तो हमें करना ही है। किंतु आत्मसंयम के साथ इसे करना चाहिए। साधारणतः हम फल की आशा रखकर कर्म करते हैं। सांसारिक विषयों के प्रति हममें राग-द्वेष होता है। इन्हें पाने या न पाने की कामना से ही कर्म किए जाते हैं। संसार के प्रति आसक्ति रहने से व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र में पड़ता है। फल सदैव हमारी कामना के अनुकूल नहीं होता क्योंकि कर्मफल पर हमारा कोई अधिकार नहीं रहता, इसलिए हमें कर्म कर्तव्य की भावना से करना चाहिए न कि कर्मफल की कामना से। इसी को निष्काम कर्म कहते हैं। कथन में 'गीता' के द्वितीय अध्याय के सैंतालीसवें श्लोक में

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

कहा है— "कर्म करना ही तुम्हारा अधिकार है, न कि कर्म का फल। कभी कर्म-फल को अपना हेतु मत बनाओ। कभी अकर्म में अपनी आसक्ति न रखो।" इस प्रकार कर्मवाद की फलाकांक्षा और अकर्मवाद की अकर्मण्यता दूर करने से निष्काम कर्मवाद बनता है।

कामनाओं से प्रेरित होकर कर्म करने से या फल की आशा रखकर कर्म करने से व्यक्ति बंधन में फँसता है किंतु निष्काम कर्म करने से मोक्ष मिलता है इसलिए व्यक्ति को कर्म बिना फल की आशा रखे करना चाहिए। यह गीता के निष्काम कर्म और कांट के कर्तव्य कर्तव्य के लिए (duty for duty's sake) में काफी समानता है, स्वर्ग की प्राप्ति की आकांक्षा से किए गए कर्म भी आसक्तिपूर्ण रहते हैं और इससे भी व्यक्ति बंधनग्रस्त होता है। निष्काम कर्म वे हैं जिन्हें व्यक्ति बिना किसी फल की कामना के करता है, ये कर्म व्यक्ति को बंधन में नहीं डालते। मनु भी फल की कामना से किए गए कर्म को अच्छा नहीं मानते।

गीता के कर्मयोग का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है—

(a) मनुष्य को सदैव अपने वर्णगत कर्तव्यों को करते रहना चाहिए।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

(b) कर्तव्य करते समय कर्तव्य को छोड़कर अन्य किसी विचार या वासना को अपनी बुद्धि के समक्ष नहीं आने देना चाहिए।

(c) चूंकि कर्मफल पर कर्ता का अधिकार नहीं है इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह मानसिक संतुलन रखकर स्वस्थ्य रूप से कर्म करे।

(d) चूंकि साधारण मनुष्य फल की इच्छा रखकर ही कोई कर्म करते हैं इसलिए चतुर व्यक्ति को फलप्राप्ति की इच्छा छोड़कर कर्तव्य करना चाहिए।

(e) ऐसे इस प्रमाद में न पड़ना चाहिए कि वह कर्म करे ही नहीं। ये कर्म तो हर हालत में करना है, किंतु फल चाहते नहीं, बल्कि कर्तव्य बुद्धि से।

अनासक्त भाव से कर्म का आचरण करने से व्यक्ति परमात्मा को प्राप्त होता है। "कर्म में आसक्त हुआ अज्ञानी जैसे कर्म करता है वैसे ही अनासक्त हुआ ज्ञानी भी लोकसंग्रह को चाहता हुआ कर्म करे।"

वस्तुतः संपूर्ण कर्म प्रकृति के गुणों द्वारा किए हुए हैं, फिर भी अहंकार से मूढ़ व्यक्ति अपने आप को कर्ता (doer) मान लेता है। 'गीता' के अनुसार आत्मा स्वभावतः कर्ता नहीं है। अज्ञानवश वह अपने

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

जो कर्म करने वाला समझा जाता है। वस्तुतः पुरुष प्रकृति से भिन्न है। अतः सांसारिक बंधन से मुक्त होने का उपाय यह है कि व्यक्ति ईश्वर को विश्व का संचालक मानते हुए अपने स्वरूप को अच्छी तरह समझते हुए तथा प्रकृति से अपने को भिन्न मानते हुए कर्म करता रहे। इस प्रकार निष्काम कर्म करनेवाला व्यक्ति संसार में रहते हुए भी सांसारिकता से परे रहता है, जिस प्रकार कमल का पत्ता जल में रहकर भी जल से बाहर रहता है। आसक्ति त्यागकर और सिद्धि - असिद्धि में समान बुद्धि रखकर कर्म करना चाहिए। अपने समस्त कर्मों तथा उनके परिणामों को ईश्वर में अर्पित कर आशा रहित और ममता रहित होकर अनासक्त भाव से कर्म करना ही निष्काम कर्म है।

'गीता' मनुष्य को मनोवैज्ञानिक क्षमताओं के अनुसार कर्म करने का उपदेश देती है। संसार में सभी व्यक्ति एक प्रकार के नहीं हैं। किसी में ज्ञान की प्रधानता है किसी में भक्ति भावना की प्रधानता है तो किसी में कर्म की प्रधानता है। गीता इन विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के लिए विभिन्न मार्ग बताती है।

गीता में तीन प्रकार के मार्ग जो योग बताए गए हैं — ज्ञान मार्ग,

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

भक्तिमार्ग और कर्ममार्ग। ज्ञान की प्रधानता रखनेवाले व्यक्तियों के लिए ज्ञानमार्ग है भक्ति भावना में अभिरुचि लेनेवाले व्यक्तियों के लिए भक्तिमार्ग है और कर्म में विश्वास रखनेवाले लोगों के लिए कर्ममार्ग है। ये तीनों मार्ग व्यक्ति को एक ही लक्ष्य (अर्थात मोक्ष या आत्मदर्शन) की प्राप्ति कराते हैं। इन मार्गों या योगों में कोई विरोध नहीं है।

गीता के नीतिशास्त्र में तीनों गुणों (सत्व, रज और तम) का सुंदर समन्वय हुआ है। सत्व ज्ञान उत्पन्न करता है, रज राग उत्पन्न करता है और तम अंधकार उत्पन्न करता है। दूसरे शब्दों में सत्व से सुख रज से दुःख एवं तम से सुख - दुःख से भिन्न भावना की उत्पत्ति होती है। गीता के अनुसार इन तीनों गुणों के प्रभाव से यह विश्व मुग्ध हो रहा है।

गीता का नैतिक दर्शन उपनिषदों के नैतिक दर्शन की भाँति - मूलतः आध्यात्मवादी है।

गीता में भी वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ, कर्मवाद, पुनर्जन्म, आत्मा की अमरता तथा ईश्वर की सत्ता को पूर्णरूपेण स्वीकार किया गया है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

गीता के अनुसार वर्ण विभाजन का आधार मनुष्य का कर्म है, जन्म नहीं।

गीता में 'स्वधर्म पालन' पर विशेष बल दिया गया है। स्वधर्म का अर्थ अपने 'वर्ण' के अनुसार कर्म करना था।

चारों वर्णों का अलग-अलग कर्तव्य था। फलासक्ति को छोड़कर केवल अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए कर्म करने के सिद्धान्त को गीता में 'निष्काम कर्मयोग' कहा गया है।

गीता के अनुसार सिद्धि-असिद्धि में समत्वभाव रखना अर्थात् विचलित न होना ही योग है।

निष्काम कर्मयोग के अतिरिक्त ज्ञानयोग तथा भक्तियोग को भी मोक्ष प्राप्ति के मार्ग के रूप में गीता में स्वीकार किया गया है।

गीता में कहीं भी कर्म के त्याग की बात नहीं कही गई है केवल कर्म में फलासक्ति के त्यागने का उपदेश दिया गया है। अतः श्री हरियन्ना ने कहा कि "गीता कर्म के त्याग का नहीं वरन् कर्म में त्याग का उपदेश देती है।"

गीता में बलपूर्वक कहा गया है कि कर्म का त्याग मनुष्य के द्वारा असंभव है।

गीता में ज्ञान एवं भक्तिमार्ग की अपेक्षा

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

कर्ममार्ग को ही अधिक महत्व दिया गया है।

समस्त इन्द्रियों तथा मन को नियंत्रित करके फलासक्ति के बिना कर्म करनेवाले मनुष्य को श्रीकृष्ण ने 'स्थितप्रज्ञ' की संज्ञा दी है। केवल स्थित-प्रज्ञ ही सुख-दुख, लाभ हानि तथा जय-पराजय में समत्वभाव रख सकता है जो कि निष्काम कर्मयोग के लिए अति आवश्यक माना गया है।

गीता अहिंसा की अपेक्षा कर्तव्य-पालन को कहीं ज्यादा महत्व देती है। अर्थात यदि अहिंसा और कर्तव्यपालन में संघर्ष हो जाये तो गीता कर्तव्य पालन को ही वरण करेगी।

गीता के नैतिक सिद्धान्तों का पालन यद्यपि सामान्य मनुष्य के लिए बहुत कठिन है किन्तु निरन्तर अभ्यास के अनुशीलन से इन सिद्धान्तों का पालन किया जा सकता है।

गीता ने संकल्प स्वातंत्र्य वाद (doctrine of free will) और नियतिवाद (determinism) में भी समन्वय स्थापित किया है। मनुष्य में आत्मा और शरीर दोनों का महत्व है। आत्मा पूर्णतया स्वतंत्र है, किंतु शरीर

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

यंत्रवत् कार्य करता है।
शारीरिक कार्यों में यंत्रगति आवश्यक
है किंतु इससे आत्मा की स्वतंत्रता
पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसप्रकार
मनुष्य के अंदर ही स्वतंत्रवाद
और नियतिवाद में समुचित
सामंजस्य स्थापित किया गया है।
यह विचार 'गीता' की अपूर्व देन
कहा जा सकता है। 'गीता' के
निष्काम कर्म की विविध व्याख्याएँ
विवेकानन्द, रामतीर्थ, तिलक, स्वामी
सहजानंद सरस्वती, गाँधी,
अरविंद, विनोबा आदि अनेक
विद्वानों ने अपने - अपने ढंग से
प्रस्तुत की है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS